नैक (NAAC) द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)
जनसंपर्क विभाग- Ph./Fax: 07152-252651, मो.9960562305
ई-मेल: mgahvpro@gmail.com, वेबसाइट: www.hindivishwa.org

शोधपरक रिपोर्ट

डॉ. कठेरिया के नेतृत्व में विषय- पर्यावरण जागरूकता: स्वच्छता अभियान और गांधी दृष्टिकोण पर नागपुर में हुआ शोध

	शिवांजलि कठेरिया, स्वतंत्र पत्रकार
	निरंजन कुमार, पीएच. डी. शोधार्थी, जनसंचार विभाग, म.गां.अं.हिं.विवि. वर्धा, महाराष्ट्र।
	नीरज कुमार सिंह, आईसीएसएसआर शोध सहायक, म.गां.अं.हिं.विवि. वर्धा, महाराष्ट्र।
	भाग्यश्री राउत, एम. ए. प्रदर्शनकारी कला, प्रदर्शनकारी कला विभाग, म.गां.अं.हिं.विवि. वर्धा
	अविनाश त्रिपाठी, एम.ए. जनसंचार, जनसंचार विभाग, म.गां.अं.हिं.विवि. वर्धा, महाराष्ट्र।

डॉ. धरवेश कठेरिया
सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
E-mail- dkskatheriya@yahoo.com, **Cell** +91 9922704241

- स्वच्छ भारत अभियान से महात्मा गांधी का नाम जोड़कर लोगों को जागरुक कर रही है सरकार।
- 67 प्रतिशत लोगों का मानना है कि स्वच्छ भारत अभियान लोगों को जागरुक करने में सफल है।
- 95 प्रतिशत प्रतिभागी स्वच्छता अभियान में वातावरण को स्वच्छ करने के उद्देश्य से जुड़े हैं।
- स्वच्छता अभियान के कारण गंदगी से होने वाली बीमारियों में आई कमी।

गांधी के सपनों को साकार कर रही सरकार

नागपुर में स्वच्छता अभियान की पहुंच 83 प्रतिशत लोगों तक

विदर्भ में चिल-चिलाती धूप, बढ़ता तापमान और पानी की भीषण समस्या कहीं न कहीं पर्यावरण जागरुकता और स्वच्छता अभियान जैसे अभियानों से जुड़ा है। देश के प्रमुख 91 जलाशयों में मात्र एक चौथाई जल शेष रह गया है। लातूर तथा परभणी जिलों में पानी की समस्या के कारण धारा 144 लगाई गयी है। इन सभी समस्याओं का कारण है पर्यावरण और स्वच्छता अभियान के प्रति जागरुक न होना। इन्हीं समस्याओं को देखते हुए हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के जनसंचार विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. धरवेश कठेरिया के नेतृत्व में नागपुर शहर में विषय- पर्यावरण जागरुकता: स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण पर शोध हुआ।

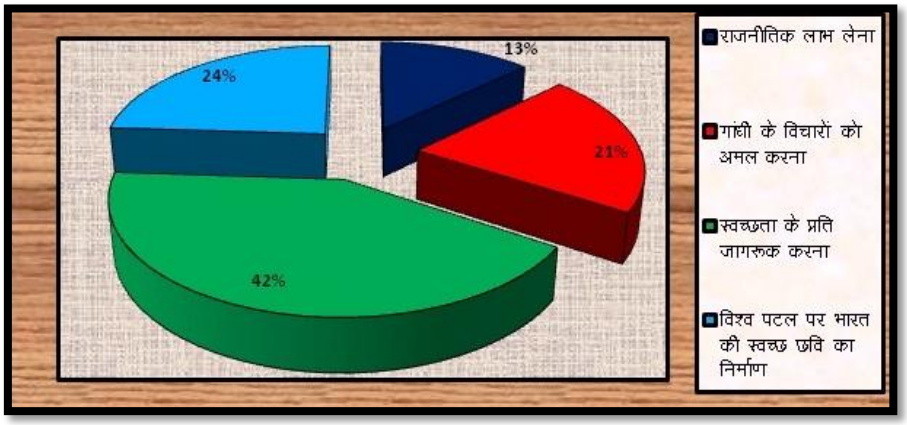

शोध में प्राप्त आंकड़ो के अनुसार 87 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि स्वच्छता अभियान गांधीजी के सपनों को साकार करने का एक प्रयास है। इस अभियान में ज्यादातर लोग वातावरण को साफ करने एवं वहीं कुछ लोग इस अभियान में राजनीतिक कारणों से भी जुड़े हैं। 42 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि इस अभियान के अंतर्गत सरकार का मुख्य उद्देश्य आमजन को स्वच्छता के प्रति जागरुक करना है। इस अभियान को ज्यादातर लोग गांधीजी द्वारा चलाए गए स्वच्छता अभियान से जोड़कर देखते हैं। स्वच्छता अभियान आरोप-प्रत्यारोप से घिरा रहा। इस अभियान को राजनीतिक लाभ से जोड़कर भी देखा जा रहा है। आंकड़ो पर गौर करें तो 68 प्रतिशत मतों के अनुसार

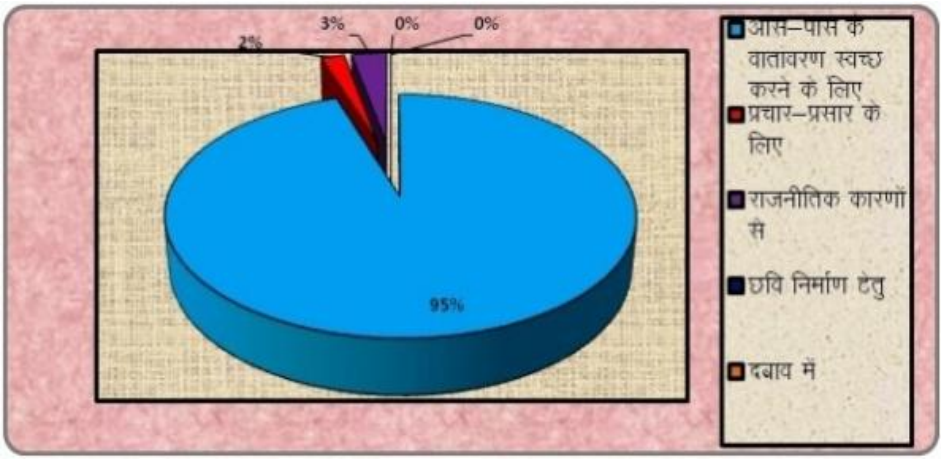

स्वच्छ भारत अभियान लोगों को जागरुक करने में सफल रहा वहीं अन्य सरकारी योजनाओं के मुकाबले स्वच्छता अभियान लोगों को जोड़ने में सफल रहा। नागपुर में प्रश्नावली के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर 83 प्रतिशत प्रतिभागी स्वच्छता अभियान से जुड़े हैं।

शोध का हवाला देते हुए डॉ. कठेरिया ने कहा कि सरकार को अगर इस दिशा में कारगर कदम उठाना है तो पूरी रणनीति बनानी पड़ेगी तभी अभियान सफल होगा। पर्यावरणीय समस्या को देश के लिए खतरा बताते हुए उन्होंने कहा कि पर्यावरण जैसी समस्या को दूर करना है तो सरकार को इस अभियान में और अधिक रूचि लेनी पड़ेगी केवल हो-हल्ला और पब्लिसिटी से काम नहीं चलेगा। डॉ. कठेरिया ने आमजन से अपील करते हुए कहा कि यह अभियान किसी सरकार से नहीं बल्कि आमलोगों से जुड़ा है इसकी सफलता देश की सफलता नहीं बल्कि विश्व जगत की सफलता मानी जाएगी। पानी का जलस्तर नीचे चला जाना, मानसून समय पर न आना, तापमान में वृद्धि होना जैसी समस्या से निजात पाना है तो पर्यावरण और स्वच्छता अभियान के प्रति जागरुक होना पड़ेगा।

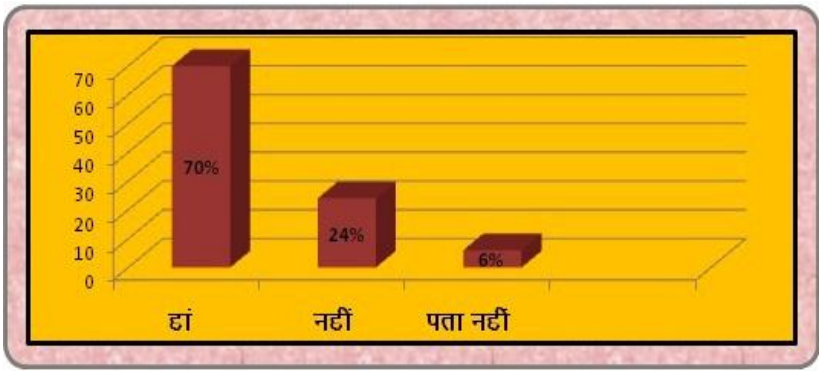

शोध संबंधी तथ्यों और आंकड़ों के संकलन के लिए सौ प्रश्नावली/अनुसूची को आधार बनाया गया है। प्रस्तुत शोध नागपुर के शहरी क्षेत्र में रहने वाले प्रतिभागियों के विचारों और सुझावों पर विशेष रुप से केंद्रित है। शोध में 18 वर्ष से अधिक आयु के महिला एवं पुरुष प्रतिभागियों को शामिल किया गया है। जिनसे पर्यावरण जागरुकता: स्वच्छ भारत अभियान और गांधी दृष्टिकोण से संबंधित तथ्य प्राप्त किए गए।

शोध के दौरान यह पाया गया कि स्वच्छता अभियान के बाद लोगों में गंदगी फैलाने वालों के प्रति विरोध का स्वर देखने को मिलता है। जो यह दर्शाता है कि आमजन में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ी है। 70 प्रतिशत प्रतिभागियों का मानना है कि वे स्थान विशेष के आधार पर स्वच्छता के नियमों का पालन करते हैं। प्राप्त तथ्य इस समस्या के लिए चिंतनिय हैं क्योंकि स्वच्छता के नियमों का पालन स्थान विशेष को देखकर नहीं किया जाना

चाहिए। स्वच्छता अभियान के कारण गंदगी से होने वाली बीमारियों में कमी आई है। 67 प्रतिशत प्रतिभागियों का

मानना है कि वे एक महीने में 1 से 3 घंटे का समय इस अभियान को देते हैं। 73 प्रतिशत प्रतिभागियों ने स्वच्छता अभियान की सफलता और इसकी पहुंच जानी-मानी हस्तियों (अमिताभ बच्चन, सचिन तेंदुलकर, मुकेश अंबानी) के जुड़ने को मानते हैं। स्वच्छता अभियान के कारण आमजन में पर्यावरण के प्रति जागरुकता बढ़ी है।
शोध अध्ययन में डॉ. कठेरिया के अलावा स्वतंत्र पत्रकार शिवांजलि कठेरिया, पीएच.डी. शोधार्थी निरंजन कुमार, आईसीएसएसआर परियोजना के शोध सहायक नीरज कुमार सिंह, एम.ए. प्रदर्शनकारी कला की छात्रा भाग्यश्री राउत, एम.ए. जनसंचार के छात्र अविनाश त्रिपाठी की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

रिपोर्ट के अनुसार नागपुर में पिछले पांच सालों में भूजल स्तर 5.25 मीटर दर्ज किया गया है। जनवरी माह की रिपोर्ट के अनुसार यह स्तर 5.23 दर्ज किया गया है जो पिछले पांच साल की रिपोर्ट के अनुसार 2 मीटर कम है। समय रहते इस पर गंभीरता से विचार नहीं किया गया तो आने वाले समय में नागपुर शहर का जलस्तर और भी नीचे चले जाने की आशंका है। हाल ही में नागपुर के नाग नदी से लेकर अम्बाझरी झील आदि जगहों पर सफाई अभियान चलाया गया पर यह कुछ ही दिन साफ रह पाई। इससे यह पता चलता है कि स्वच्छता अभियान की सफलता एक दिन की स्वच्छता से नहीं बल्कि उसकी निरंतरता भी उतना ही मायने रखती है।